22 सितम्बर, 2017 को डेली कॉलेज, इंदौर में ''ईशा फाउंडेशन'' द्वारा आयोजित ''रैली फॉर रिवर'' समारोह में माननीय अध्यक्ष का भाषण

1. ईशा फाउंडेशन के संस्थापक और प्रख्यात आध्यात्मिक व्यक्तित्व सद्गुरु जग्गी वासुदेवजी की पहल पर आयोजित ''रैली फॉर रिवर्स'' समारोह में भाग लेकर मुझे बहुत खुशी हो रही है। मानव सभ्यता के इतिहास में, नदियों ने सदा ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है क्योंकि मानवजाति द्वारा बसाई गई बस्तियां नदियों के किनारे पर फली–फूलीं फिर चाहे वह सिन्धु घाटी की सभ्यता रही हो, मेसोपोटामिया की हो या दजला और फुरात की या येलो रिवर की सभ्यता रही हो। ये सभी सभ्यताएं नदियों के आस–पास ही फली–फूलीं। नदियों के किनारों पर ही बड़े–बड़े शहरों का निर्माण हुआ।

2. नदी को देखते ही मन में विचार आता है कि नदी कहां से आती है और कहां जाती है? आदि और अन्त ढूंढने की सत्य और सनातन खोज करने की प्रेरणा शायद हमें नदी से ही मिली है। उपनिषद व भारतीय वांगमय, मैथ्यु आर्नोल्ड जैसे यूरोपियन कवि और रोम्या रोलां जैसे उपन्यासकार जीवन को नदी की उपमा देते हैं।

3. इस संसार की प्रथम यात्री है नदी। नदी व जीवन का क्रम एक समान है। नदी स्वधर्म निष्ठ रहती है और अपने कुल की मर्यादा की रक्षा करती है और इसलिए प्रगति करती है। अन्त में नाम रूप को त्यागकर समुद्र में विलीन हो जाती है। विलीन होने पर भी वह नष्ट नहीं होती, बल्कि समुद्र के रूप में निरंतर चलती ही रहती है। जीवन का भी यही क्रम है।

4. निस्संदेह जल को जीवन कहा गया है और यह सच है। बिना पानी के न वनस्पति और न ही पशु–पक्षी जी सकते हैं। बिना पानी के सजीव जगत और पर्यावरण का ही कोई

अस्तित्व है। शायद इसीलिए ईश्वर ने पृथ्वी के तीन चौथाई हिस्से में पानी और एक भाग ही जमीन की रचना की ताकि हमें समझ हो कि जल ही जीवन है। बेहोश मनुष्य की आंखों में पानी के छींटे डालते ही वह तुरंत होश में आ जाता है, तो फिर अनंत बूंद से युक्त सरोवर को छलकते देख कर जीवन कृतार्थ होने जैसा आनन्द बहुत स्वाभाविक है। ग्रन्थों में नदियों को ''विश्वस्य मातरः'' कहा गया है। इनकी महत्ता इतनी है कि नित्य पूजा में भी हम सभी नदियों का पुण्य–स्मरण करते हुए कहते हैंः–

गंगे! च यमुने! चैव गोदावरिः! सरस्वति!

नर्मदे! सिंधु! कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधि कुरू!

5. यह एक श्रेष्ठ भारतीय परंपरा रही है कि प्राचीन काल से ही हमारे यहाँ नदियों को पूजा जाता है। इस विशाल भारत भूमि में गंगा, यमुना, ब्रह्मपुत्र, सतलुज, ब्यास, नर्मदा, ताप्ती, कृष्णा, कावेरी, गोदावरी, पेरियार, महानदी इत्यादि जैसी अनेक नदी एवं नदी प्रणालियाँ हैं। इन नदियों से त्यौहार भी जुड़े हुए हैं। पुष्कर जैसे हमारी पौराणिक कथाओं में ऐसे साधु–संतों की अनेक कहानियाँ हैं जिन्होंने मोक्ष की खोज में नदी किनारे साधना की। भारतीय सभ्यता और संस्कृति में पावन गंगा नदी का विशेष महत्व है। इसे मूर्तिकला, कला, साहित्य, कविताओं, संगीत और नृत्य के माध्यम से अमर बना दिया गया है।

6. इनमें से हर नदी का अपना अलग महत्व है जिसका वर्णन हमारे धर्मग्रंथों में बहुत विस्तार से किया गया है। ये नदियां हमारे जीवन, आजीविका और आध्यात्मिकता की स्रोत हैं। गंगा जहां पवित्रता का प्रतीक है, वहीं यमुना के किनारे पर मथुरा का पावन शहर बसा है जहाँ भगवान् कृष्ण का जन्म हुआ था जिनके अनुयायी पूरे संसार में हैं

और जो प्रेम और स्नेह के प्रतीक हैं। विलुप्त नदी सरस्वती को ज्ञान और विद्या की नदी कहा जाता है। कुमारी नदी के नाम से प्रख्यात नर्मदा नदी के साथ वैराग्य का गुण जुड़ा हुआ है। वहीं गोदावरी को भक्ति पंथ के साथ जोड़ा जाता है। ऐसा माना जाता है कि राम, सीता और लक्ष्मण ने इसी नदी के साथ लगे जंगलों में वनवास का लम्बा समय बिताया था। इसी तरह कावेरी नदी को ज्ञान और कृष्णा नदी को पराक्रम के साथ जोड़ा जाता है। कावेरी के तट पर प्रसिद्ध विकसित हुआ संगीत **कर्नाटक संगीत** के नाम से जाना जाता है।

7. हालांकि, धरती के तीन–चौथाई भाग में पानी है, लेकिन इसमें से अधिकाँश समुद्र का खारा पानी है। धरती के जल संसाधनों का छोटा–सा भाग ही मीठा पानी है जिसका उपयोग पीने और खेती–बाड़ी के लिए किया जा सकता है। ऐसे में सैमुएल टेलर कोलरिज की कही हुई बात हमारे कानों में गूंजती है। उन्होंने कहा था "water water everywhere, but not any drop to drink!" अर्थात आस–पास सब जगह पानी होने के बावजूद पीने लायक एक बूँद पानी नहीं है! उस कवि ने नदियों के पानी की रक्षा और संरक्षण करने के महत्त्व पर जोर दिया था जो उचित ही है।

8. साफ़ पानी वातावरण को बनाए रखने के साथ–साथ धरती पर सभी जीवों के स्वास्थ्य और जीवित रहने के लिए आवश्यक है। इससे यह स्पष्ट होता है कि मानव बस्तियों के लिए नदी का किनारा सबसे उपयुक्त स्थान होता है क्योंकि यहाँ पीने और खेती के लिए पानी उपलब्ध होता है।

9. नदियों की इतनी प्रशंसा से इस बात का पता चलता है कि वे हमारे जीवन में कितनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इसके साथ ही, हमें बड़े दुःख के साथ इस बात को भी स्वीकार करना पड़ेगा कि भारत में नदियों की स्थिति बहुत अच्छी नहीं है। छोटी–छोटी नदियाँ सूख गई हैं और गायब हो गई हैं और बड़ी नदियों को बड़े पैमाने पर प्रदूषण के खतरे का सामना करना पड़ रहा है।

10. एक ओर तो हम बड़े भक्ति भाव से नदियों को पूजते हैं और दूसरी ओर हम सभी तरह की गंदगी इन नदियों में ही डालते हैं, यह जानते हुए भी कि करोड़ों लोग इन नदियों का पानी पीते हैं और अरबों प्राणियों का जीवन इनसे पलता है। हमारी सभ्यता का विकास हुआ, बड़े–बड़े नगर बसे, उद्योग लगे, जनसंख्या बढ़ी, पर इससे हमारी नदियों एवं नहरों को बहुत सजा मिली। उद्योग से निकला गंदा पानी, तेल, कचरा, गंदगी, कूड़ा–करकट सब नदी में जाने लगा, वन वृक्ष कटने लगे, रेत मिट्टी नदियों के तले में बैठने लगी। इन्हीं नदियों में औद्योगिक अपशिष्ट पदार्थ और अधजले शव भी बहा दिए जाते हैं। आज हमारी अधिकतर नदिया दूषित हैं। इन नदियों के प्रति हमारा कुछ कर्त्तव्य है। आइए, आज नदियों के अपार महत्व को समझते हुए, हम प्रण करें कि इनका सम्मान करेंगे, इनकी मर्यादा को खराब नहीं करेंगे। आज Rally for Rivers का संदेश जन–जन तक पहुंचे। यह मानव सभ्यता के स्थायित्व के लिए अत्यन्त आवश्यक है।

11. नदियों के सुरक्षा के लिए हम सबको सतर्क होना होगा। इसके लिए जन–भागीदारी एवं स्वप्रेरणा का सर्वाधिक महत्व है। हमें स्वप्रेरणा से नदियों को गंदा नहीं करना चाहिए। इसके पुनर्जीवन के लिए के लिए एकजुट होकर काम करना चाहिए। Rivers are

lifelines of any civilization. नदी जीवनदायिनी है। नदी है, तो जल है और जल है तो जीवन है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि नदियों के सूखने के कारण बड़ी–बड़ी सभ्यताएं नष्ट हो गईं। अतः हमें इस सत्य को सदैव समझना होगा कि उनकी रक्षा वास्तव में मानव सभ्यता की सुरक्षा करना है।

12. कृषि प्रधान देश होने के नाते हम धरती के महत्व को भी खूब समझते है। हम धरती से बहुत–कुछ लेते हैं, पर धरती से उसका सब–कुछ ना ले लें, इसके प्रति भी सचेत हैं। लगभग 65 प्रतिशत मीठे पानी के लिए हम नदियों पर ही निर्भर हैं। अतः उनका संरक्षण एवं पुनर्जीवन हमारा धर्म है।

13. बदलते सामजिक–आर्थिक परिवेश में नदियों के महत्त्व को समझते हुए आम जनता को नदियों को प्रदूषण से बचाने की आवश्यकता के महत्व को रेखांकित किया जाना अत्यन्त आवश्यक है। कभी–कभी नदियों से रेत का खनन करने से भी अपूरणीय क्षति हो सकती है। इन परिस्थितियों में सद्गुरु श्री जग्गी वासुदेव जी के प्रबुद्ध मार्गदर्शन में ईशा फाउंडेशन ने मिट्टी और नदियों के पुनरुद्धार का यह मिशन शुरू किया है। सद्गुरु जी ने नदियों के पास की मिटटी की कम हो रही उर्वरता के बारे में उचित ही कहा है कि यह स्थिति खतरनाक है। पर्यावरण के बारे में उनकी चिंता से तो सभी वाकिफ हैं।

14. नदियों का संरक्षण न केवल मानव बल्कि सम्पूर्ण बायो सिस्टम के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। Ecosystem में इसके सभी घटक एक दूसरे पर निर्भर है। चाहे प्राणी जगत हो या वनस्पति जगत सबमें एक प्राकृतिक सामंजस्य है। जनसंख्या की वृद्धि के कारण वह सामंजस्य अस्थिर होता दिख रहा है। अतः, पर्यावरण स्थिरीकरण बहुत आवश्यक है। नदियां

aquaculture के मूल में हैं। नदी किनारे ही जीवन पलता है, flora and fauna विकसित होते हैं। नदियों के दोनों किनारों पर लगभग 1 किलोमीटर की चौड़ाई में वनस्पतियों का plantation किया जाना एक अच्छा विचार जिससे soil erosion में कमी होगी, भूमिगत जल संरक्षण होगा और बारिश का पानी इन पेड़ों की जड़ों के जरिए होते हुए नदियों में जा मिलेगा। साथ ही साथ, नदी किनारे की किसानों की जमीन पर फलदार वृक्ष के plantation से जहां उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार होगा वहीं पर्याप्त मात्रा में फलों की उपलब्धता से देश के लोगों को पोषण (nutritional intake) भी मिलेगा।

15. नदियों के किनारों पर Bio-diversity पार्क के विकास से भी पर्यावरण की रक्षा संभव हो सकेगी। यदि बड़े पैमाने पर Bio-diversity पार्क विकसित किए जाते हैं तो स्वतः ही नदियों के संरक्षण का मार्ग प्रशस्त हो जाएगा।

16. नदियां धरती के लिए थर्मामीटर जैसी हैं जो निरंतर हो रहे जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण एवं बढ़ते तापमान को दर्शाती हैं। सभ्यता और संस्कृति को सुरक्षित रखने के लिए नदियों का संरक्षण परमावश्यक शर्त है। पृथ्वी पर पिछले 150 वर्ष में विकास के नाम पर जो कुछ प्रगति हुई हैं, उससे पर्यावरणीय क्षतियां हुईं हैं। अब वक्त आ गया है कि हम अपने पर्यावरण और जलवायु पर ध्यान दें। कोशिश यह होनी चाहिए कि नदियों एवं उसके संपूर्ण जलग्रहण क्षेत्रों को restore किया जाए। आइए हम सब मिलकर इस दिशा में सकारात्मक कदम उठाएं तभी सम्पूर्ण विश्व में मूलभूत सुविधाओं के साथ–साथ स्वास्थ्य, रोजगार और शिक्षा के समान अवसर सभी को उपलब्ध हों।

17. मैं इस अवसर पर सद्गुरु के कार्य की सराहना करती हूँ जो देश के कोने–कोने में जाकर लोगों को जागरूक बनाकर उन्हें नदियों की स्थिति सुधारने के कार्य में सहयोग करने के लिए प्रेरित कर रहे हैं। उन्होंने अपने अभियान में अनेक स्कूलों को पेड़ लगाने के अपने अभियान में शामिल किया है। मुझे यह जानकर बहुत खुशी हुई है कि नदियों के पुनरुद्धार के लिए ईशा फाउंडेशन की इस पहल का लोग समर्थन कर रहे हैं। इससे पता चलता है कि लोग वास्तव में पर्यावरण की परवाह करते हैं और यदि उन्हें जागरूक बनाया जाए तो वे आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रकृति के संरक्षण के लिए आगे आयेंगे।

18. सद्गुरू वासुदेव जी ने इस मुद्दे को बहुत सही ढंग से उठाया है और उन्होंने इसके लिए अनुकूल वातावरण बनाने की शुरुआत की है। पर्यावरण प्रदूषण से निपटने और नदियों के पुनरुद्धार जैसे मामले रातों–रात हल नहीं हो सकते क्योंकि इसकी प्रक्रिया समय मांगती है। इसके लिए निरंतर प्रयास करने की आवश्यकता है और वासुदेव जी के प्रयास को एक लम्बे सफ़र में शुरूआती, किन्तु महत्वपूर्ण कदम के रूप में देखा जाना चाहिए। मैं एक बार फिर वासुदेवजी के निष्ठावान प्रयासों की सराहना करती हूं और मुझे विश्वास है कि लोगों के समर्थन से नदियाँ फिर से अपने खोये हुए वैभवशाली स्थान को प्राप्त करेंगी और अविरल बहेंगी।

धन्यवाद।

———————